इब्रानियों की पुस्तक

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
दो

विषय-वस्तु और संरचना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:20) 4

II. आवर्ती विषय-वस्तु (1:18) 4

A. यीशु में अन्तिम दिन (2:10) 4

B. पुराने नियम का समर्थन (9:03) 6

1. तथ्यात्मक पृष्ठभूमियाँ (9:50) 6

2. धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण (11:01) 7

3. नैतिक दायित्व (14:49) 8

4. युगान्तकालीन भविष्यद्वाणियाँ (16:00) 8

5. राजवंशीय आदर्श (18:23) 9

C. दृढ़ विश्वास के लिए उपदेश (20:24) 9

1. प्रतिक्रियाएं (22:00) 10

2. प्रेरणाएँ (25:32) 10

III. अलंकारिक संरचना (34:40) 11

A. स्वर्गदूतीय प्रकाशन (36:44) 11

B. मूसा का अधिकार (40:38) 12

C. मलिकिसिदक का महायाजकीयपन (43:32) 13

D. नई वाचा (51:18) 14

E. व्यावहारिक दृढ़ता (1:01:36) 15

IV. सारांश 16

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 17

उपयोग के प्रश्न 21

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग के प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:20)

II. आवर्ती विषय-वस्तु (1:18)

इब्रानियों के लेखक ने उसके पाठकों को यह उपदेश देने के लिए लिखा कि वे स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दें और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

A. यीशु में अन्तिम दिन (2:10)

मसीही धर्मशास्त्री अक्सर बाइबल की अन्तिम दिनों के लिए दी गई शिक्षाओं को "युगान्तविज्ञान" के रूप में उल्लेख करते हैं। (यह तकनीकी शब्द यूनानी शब्द *इस्काटोस* (ἔσχατος) से आता है जिसका अर्थ "पिछला" या "अन्तिम" से है।)

इब्रानियों के लेखक के ध्यान में जब वह अपनी इस पुस्तक को लिख रहा था, तो युगान्तविज्ञान था (इब्रानियों 1:1-2)।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस्राएल का इतिहास हमें इब्रानियों की पुस्तक में पाए जाने वाले युगान्तविज्ञान को समझने में सहायता करता है :

- राजशाही अवधि के मध्य, इस्राएल परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करने में और बड़ी गहराई से गिरता चला गया।

- इस्राएल और यहूदा बन्धुआई में चले गए।

- उनके विद्रोह के कारण इस्राएल ने आने वाली पाँच शताब्दियों तक मादी और फारसी, यूनानी और अन्त में रोमी साम्राज्य के अंतर्गत दुःख उठाए।

- पुराने और नए नियमों के मध्य में, अधिकांश यहूदी समुदायों ने इस आशा को स्थिरता से थामे रहा कि परमेश्वर का अन्तिम न्याय और आशीषें अन्तिम दिनों में आ जाएंगी।

इतिहास के दो महान युग :

- "यह युग" – पाप का युग जिसके फलस्वरूप इस्राएल असफल हुआ और बन्धुवाई में गया।

- "आने वाला युग" – वह समय जब परमेश्वर अपने अन्तिम न्याय को उसके शत्रुओं और उसकी अन्तिम, महिमामयी आशीषों को उसके विश्वासयोग्य लोगों के ऊपर उण्डेल देगा।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इब्रानियों के लेखक ने अविश्वासी यहूदियों और मसीह के अनुयायियों के बीच धर्मविज्ञानी भिन्नताओं की ओर संकेत किया :

- अविश्वासी यहूदी : मसीह एक भंयकर, नाटकीय परिवर्तन इस युग और आने वाले युग में लेकर आएगा।

- मसीह के अनुयायी : यीशु वह मसीहा है जो अन्तिम दिनों को तीन चरणों में लेकर आएगा : उदघाटन, निरंतरता और पराकाष्ठा या शिरो-बिन्दु (प्रेरितों के काम 2:17, 2 पतरस 3:3)।

लेखक के लिए "अंतिम दिनों" का विषय महत्वपूर्ण था (इब्रानियों 2:5; 6:5; 9:11; 9:26; 10:1; 13:14).

B. पुराने नियम का समर्थन (9:03)

इब्रानियों की पुस्तक पुराने नियम से लगभग 100 बार इससे उद्धरण लेती है, इसकी ओर संदर्भित करती है, या इसकी ओर संकेत करती है।

1. तथ्यात्मक पृष्ठभूमियाँ (9:50)

इब्रानियों के लेखक ने मसीही विश्वास के अपने प्रस्तुतीकरण में ऐतिहासिक विवरणों को जोड़ दिया (इब्रानियों 7:2; 12:20-21)।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण (11:01)

इब्रानियों लेखक ने लेखक ने इब्रानी पवित्रशास्त्र में अभिपुष्ट धर्मवैज्ञानिक मान्यताओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया है।

- परमेश्वर का पुत्र (इब्रानियों 1:5, 2 शमूएल 7:14)

- स्वर्गदूतों को सेवा करने वाली आत्माओं के रूप में (इब्रानियों 1:7, भजन संहिता 104:4)

- स्वर्गदूतों से कम (इब्रानियों 2:6-8, भजन संहिता 8:4-6)

- परमेश्वर की धार्मिकता की आशीषें (इब्रानियों 2:13, यशायाह 8:17)

- परमेश्वर की अब्राहम के साथ खाई हुई शपथ (इब्रानियों 6:13-14, उत्पत्ति 22:17)

- परमेश्वर एक भस्म करने वाली आग के रूप में (इब्रानियों 12:29, व्यवस्थाविवरण 4:24)

- पुराने और नए नियम के समयों के बीच धर्मविज्ञानी निरंतरता के अन्य उदाहरण (इब्रानियों 4:4-7; 8:5; 9:20; 10:30, 31; 10:38; 13:5)।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. नैतिक दायित्व (14:49)

पुराने नियम की नैतिक आवश्यकताएं नए नियम के समय में भी मानक बनी रहेंगीं :

- बलवा न करना (इब्रानियों 3:7-15, भजन संहिता 95:7-11)
- निरूत्साहित न होना (इब्रानियों 12:5-6, नीतिवचन 3:11-12)
- धार्मिकता के मार्ग पर चलते रहना (इब्रानियों 12:13, नीतिवचन 4:26)
- परमेश्वर पर भरोसा रखना (इब्रानियों 13:6, भजन संहिता 118:6-7)

4. युगान्तकालीन भविष्यद्वाणियाँ (16:00)

इब्रानियों के लेखक ने पुराने नियम की कई युगान्तकालीन भविष्यद्वाणियों का उपयोग यह प्रगट करने के लिए किया है कि परमेश्वर का अन्तिम न्याय और आशीषें मसीह में पूरी होंगी :

- स्वर्गदूत दण्डवत् करेंगे (इब्रानियों 1:6, व्यवस्थाविवरण 32:43)
- समकालीन प्रबन्ध नाश कर दिया जाएगा (इब्रानियों 1:10-12, भजन संहिता 102:25-27)
- विश्वव्यापी सम्प्रभुता (इब्रानियों 1:13, भजन संहिता 110:1)
- परमेश्वर की ओर से राजकीय महायाजकपन (इब्रानियों 5:6; 7:17, भजन संहिता 110:4)
- मनुष्य की असफलता पर विजय (इब्रानियों 8:8-12, यिर्मयाह 31:31-34)
- आगे बलिदानों की आवश्यकता नहीं (इब्रानियों 10:16-17, यिर्मयाह 31)
- युगान्तकालीन युग के बारे में अन्य भविष्यद्वाणियां (इब्रानियों 7:21; 10:37; 12:26)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. राजवंशीय आदर्श (18:23)

लेखक ने कई राजवंशीय आदर्शों की ओर संकेत किया है जो कि दाऊद की वंशावली के लिए भजन संहिता में स्थापित किए गए थे।

यीशु ही दाऊद के राजकीय घराने के आदर्शों की सर्वोच्च, सिद्ध पूर्णता है।

- जातियों पर राज्य करने के लिए एक राजकीय पुत्र (इब्रानियों 1:5, भजन संहिता 2:7, 2 शमूएल 7:14)

- एक राजा का सम्मान (इब्रानियों 1:8-9, भजन संहिता 45:6-7)

- इस्राएलियों के साथ धार्मिकता के आनन्द का साझा करना (इब्रानियों 2:11-12, भजन संहिता 22:22)

- परमेश्वर के प्रति शरीरों का समर्पण (इब्रानियों 10:5-7, भजन संहिता 40:6-8)

C. दृढ़ विश्वास के लिए उपदेश (20:24)

इब्रानियों की पुस्तक में लगभग 30 स्पष्ट उपदेश सम्मिलित हैं।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. प्रतिक्रियाएं (22:00)

लेखक के उपदेशों ने उसके श्रोताओं को उसकी पुस्तक को भावनात्मक, धारणात्मक और व्यवहारात्मक रूप में लागू करने के लिए उत्साहित किया :

- भावनात्मक उपदेश (इब्रानियों 3:8; 3:13; 3:15; 4:1; 4:16; 10:22; 10:35)

- धारणात्मक उपदेश (इब्रानियों 2:1; 3:1; 6:1)

- व्यवहारात्मक उपदेश (इब्रानियों 12:16; 13:1-19)

2. प्रेरणाएँ (25:32)

इब्रानियों के लेखक ने अपने कई उपदेशों को सकारात्मक प्रेरणाओं के साथ जोड़ा (इब्रानियों 4:13-16; 10:35; 13:16)।

लेखक ने अपने पाठकों को उपदेश देने के लिए कई नकारात्मक प्रेरणाओं का प्रयोग किया (इब्रानियों 2:2-3; 6:4-8; 10:26-31)।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि इब्रानियों की पुस्तक एक तकनीकी विधिवत् धर्मविज्ञान नहीं है।

इब्रानियों का लेखक कभी भी धर्मत्याग करने वाले को "धर्मी" के रूप में वर्णित नहीं करता है। परन्तु उसने कुछ ऐसी शब्दावलियों का उपयोग किया जिन्हें इवैंजेलिकल लोग अक्सर केवल सच्चे विश्वासियों के लिए ही उपयोग करते हैं।

धर्मत्याग के लिए ईश्वरीय न्याय इब्रानियों के लिए विशेष नहीं है।

III. अलंकारिक संरचना (34:40)

A. स्वर्गदूतीय प्रकाशन (36:44)

पहली शताब्दी में यहूदी समुदायों में अक्सर स्वर्गदूतों को सामर्थी, महिमामयी प्राणियों के रूप में महिमा मिलती थी जो कि ईश्वरीय प्रकाशनों को निम्न स्तर के मानवीय प्राणियों तक लेकर आते थे।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

लेखक ने स्वर्गदूतों के प्रकाशन की चुनौती का उत्तर पाँच चरणों में दिया :

- ईश्वरीय प्रकाशन का स्त्रोत (1:1-4)

- परमेश्वर का मसीहवाचीय पुत्र (1:5-14)

- उद्धार का सन्देश (2:1-4)

- स्वर्गदूतों के ऊपर न्यायी (2:5-9)

- अब्राहम का वंश (2:10-18)

B. मूसा का अधिकार (40:38)

इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को यह उपदेश दिया के वे यीशु के अधिकार को मूसा के अधिकार से ऊपर रखें, उसने कहा कि वे :

- मूसा से अधिक यीशु का सम्मान करें (3:1-6)

- हृदय की कठोरता से बचें (3:7-19)

- परमेश्वर के विश्राम में पहुंचें (4:1-13)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. मलिकिसिदक का महायाजकीयपन (43:32)

इब्रानियों के लेखक ने मलिकिसिदक के राजकीय याजकपन के बारे में स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को चुनौती दी :

- विश्वास को दृढ़ता से थामे रहना (4:4-16)

- यीशु ने महायाजक होने की सारी योग्यताओं को पूरा किया। (5:1-10)

- परिपक्वता की ओर आगे बढ़ना (5:11-6:12)

- यीशु लेवीय याजकपन से आगे बढ़ गया (6:13-7:28)

लैव्यवस्था-संबंधी बलिदान कभी भी पूरे प्रायश्चित को नहीं ला सके, परन्तु मलिकिसिदक के याजकपन की पूर्णता के रूप में, मसीह ने सदैव के लिए और सभों के लिए एक ही बार में प्रायश्चित कर दिया था।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

D. नई वाचा (51:18)

इब्रानियों का लेखक मसीह की श्रेष्ठता के बारे में और ज्यादा वर्णन यह विचार विमर्श करते हुए देता है कि जब परमेश्वर ने मसीह को राजकीय महायाजक के रूप में ठहराया तो कैसे नई वाचा पुरानी से श्रेष्ठ है।

- यीशु स्वर्ग में राजकीय महायाजक होने के नाते नई वाचा की मध्यस्थता करता है (8:1-13)

- यीशु लेवीय याजकपद से श्रेष्ठ है (9:1-18)

- यीशु पाप की सम्पूर्ण क्षमा लेकर आया (10:1-18)

- आशा को पकड़े रहो (10:19-23)

- एक दूसरे को प्रोत्साहित करो (10:24-31)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- अपने अतीत को स्मरण करें और अपने हियाव को न छोड़ें (10:32-35)

- परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए विश्वास में दृढ़ रहो (10:36-39)

- बचाने वाला विश्वास (11:1-40)

E. व्यावहारिक दृढ़ता (1:01:36)

अंत में लेखक ने जीवन के विशेष क्षेत्रों के बारे में बहुत से उपदेशों दिए :

- विश्वास में ऐसे दृढ़ बने रहो जैसे कि दौड़ में (12:1-3)

- कठिनाइयों का सामना करो (12:4-13)

- एक दूसरे को प्रोत्साहित करो (12:14-17)

- मसीह में पाई आशीषों के लिए धन्यवादी बनो (12:18-29)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- प्रतिदिन के जीवन में विश्वासयोग्य रहो (13:1-19)

- समाप्ति (13:20-25)

IV. सारांश (1:08:31)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. स्पष्ट कीजिए कि इब्रानियों के लेखक ने युगांतविज्ञान पर इतना ध्यान क्यों केन्द्रित किया।

2. इब्रानियों के लेखक ने अपने धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों के समर्थन में किस प्रकार पुराने नियम का प्रयोग किया? कुछ उदाहरण दीजिए।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. दृढ बने रहने के लेखक के उपदेशों की दो महत्वपूर्ण विशेषताओं को बताइए और स्पष्ट कीजिए।

4. इब्रानियों के लेखक ने किस प्रकार अपने पाठकों को सिखाया कि यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. यीशु के अधिकार को मूसा के अधिकार से ऊपर रखने में इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को विश्वास दिलाने के लिए कैसे उपदेशों का प्रयोग किया? यह महत्वपूर्ण क्यों था?

6. इब्रानियों के लेखक ने यीशु को मलिकिसिदक से ऊपर यीशु के अधिकार को रखने के लिए क्यों उत्साहित किया?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. सम्पूर्ण विवरण दीजिए कि किस प्रकार नई वाचा पुरानी से श्रेष्ठ है।

8. कठिनाई के सामने दृढ बने रहने के लिए इब्रानियों के लेखक ने कम से कम जिन पांच व्यावहारिक तरीकों का प्रयोग किया उनका वर्णन कीजिए।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. इब्रानियों की पुस्तक में पाए जाने वाले युगान्तविज्ञान की शिक्षा के प्रकाश में आप आने वाले युग में किन बातों की आशा और अपेक्षा करते हैं?

2. इब्रानियों की पुस्तक लगभग 100 बार पुराने नियम का उद्धरण या उल्लेख करते हैं। आप अपने जीवन और सेवकाई में पुराने नियम के महत्व को किस प्रकार बनाए रखते हैं?

3. पुराने नियम द्वारा स्थापित उन मांगों को समझने में सहायता के लिए आप किन निर्देशिकाओं, साधनों या विधियों का प्रयोग करते हैं जो आज भी वर्तमान कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण बनी हुई हैं?

4. उन लोगों का नाम बताइए जो आपके लिए प्रोत्साहन का स्त्रोत रहे हैं। किस प्रकार इन लोगों ने आपको मसीह में विश्वासयोग्य रहने और दृढ बने रहने में सहायता की है?

5. कौनसी परीक्षाएं, सताव या दबाव आपको मसीह के प्रति वफादार रहना मुश्किल बना देते हैं?

6. इब्रानियों में पाए जाने वाले प्रोत्साहनों और चेतावनियों को आप सुसमाचारिक साधन के रूप में कैसे प्रयोग कर सकते हैं?

7. अपने समुदाय, देश या राष्ट्र में कौनसी शिक्षाएं या कार्य मसीहियों के समक्ष गंभीर चुनौती उत्पन्न करते हैं?

8. यह समझ कि यीशु आपका राजकीय महायाजक है, किस प्रकार आपके प्रार्थना के जीवन को प्रभावित करता है?

9. किन रूपों में इब्रानियों का संदेश कठिनाइयों को सहने में आपकी सहायता करता है?

10. इब्रानियों की पुस्तक का एक उद्देश्य इस बात पर बल देना है कि यीशु मसीह ने हमारे लिए पाप पर विजय पा ली है। आप अपने प्रभाव और सेवकाई के क्षेत्रों में किस प्रकार लोगों को मसीह की इस पर्याप्तता के बारे में बता सकते हैं?

11. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org